अस्थिछिद्रता की दवा खोजी गई

अस्थिछिद्रता एक रोग है जिसमें हड्डियां कमज़ोर पड़ जाती हैं। यह इस कारण से होता है क्योंकि आम तौर पर उम्र के साथ हड्डियों की क्षतिपूर्ति नहीं हो पाती और उनका घनत्व कम होने लगता है। हाल ही में *नेचर मेडिसिन* में प्रकाशित एक शोध पत्र में बताया गया है कि इस रोग से निपटने में कारगर एक अणु खोज लिया गया है।

वी.के. यादव और उनके साथियों द्वारा किए गए इस अनुसंधान में चूहों को मॉडल के रूप में उपयोग किया गया था। यह देखा गया है कि आंतों में बनने वाला एक पदार्थ जीडीएस हड्डियों के निर्माण को रोकता है। यादव व उनके साथियों ने सोचा कि यदि जीडीएस के निर्माण को रोका जा सके तो हड्डियों के निर्माण में बाधा नहीं आनी चाहिए। ऐसा होने पर हड्डियों की क्षतिपूर्ति सुचारु रूप से होगी और अस्थिछिद्रता से निजात मिलेगी।

उन्होंने LP533401 नामक एक अणु का संश्लेषण किया जो ट्रिप्टोफेन हाइड्रॉक्सीलेज़-1 नाम के एक एंज़ाइम की क्रिया में बाधा पहुंचाता है। ट्रिप्टोफेन हाइड्रॉक्सीलेज़-1 वह एंज़ाइम है जो जीडीएस के निर्माण के पहले चरण में मददगार होता है। जब कुछ चूहों को इस नवीन अणु की दैनिक खुराक दी गई तो उनमें हड्डियों का निर्माण बेहतर हुआ और अस्थिछिद्रता की स्थिति पैदा नहीं हुई।

शोधकर्ताओं को लगता है कि उक्त अणु इन्सानों में भी कारगर होगा और यह अस्थिछिद्रता के लिए एक नया इलाज साबित हो सकता है। ***(स्रोत फीचर्स)***